कल्याणकाङ्किणा कार्य सुविचार्य (एव) विधातव्यम्। यः मानवः एतत् अविचायं करोः

4. क्षिप्रम् अक्रियमाणस्य आदानस्य प्रदानस्य कर्तव्यस्य च कर्मणः तद्रसं कालः पिबित्

# <्रे॰ शब्दार्थाः **र्र**

असहाय

धार्मिक यात्रा

एक लीटर

लौट आई

हैरानी से

दूध दुहना

होने वाला

बेचकर

खाली

दोनो जुटे हुए

ट्रटकर समाप्त

धेनुः मन्दस्वरेण मनोहर: विरम जिह्वालोलुपताम्

मी: निम्नस्वरेण आकर्षक: तिष्ठ रसनालोभम्

गाय धीमी आवाज में मनमोहक रुको जीभ का लालच

In low volume Attractive Stop Fascination of tongue Incapable Pilgrimage One liter Come Back With astonishment Milking Both involved Breakable

Cow

अक्षमः धर्मयात्राम् संटकम् प्रत्यागता साश्चर्यम् द्ग्धदोहनम् निरती भङ्गरम्

असमर्थः तीर्थयात्राम् एकलीटरिमतम् प्रत्यायाता सविस्मयम् पयोदोहनम् संलग्नौ भञ्जनशीलं

विक्रयं कृत्वा

शुन्या:

परस्परम्

आजा

नीरसम्

निश्चितम्

शोणिताप्लावितम् कल्याणेच्छकेन

Selling Empty Wet with blood To each other Permission Dry Certainly By well wisher

विक्रीय रिक्ता: वितरज्ञितम् अन्योन्यम् अनुमतिम् एकम् ्वम् त्त्याणकाङ्<u></u>चिणा

> दु:खम् आप्नोति यवनिका द्रतम्

खून से सना आपस में अनुमति सुखा निश्चित रूप से कल्याण चाहने वाले के द्वारा दुखी होता है पर्दा शीघ्रता से

Gets agony Curtain Quickly

ग्वीदति वनिका ग्रम्

1

### र्दे अध्यासः र

एकपदेन उत्तरं लिखत-

(क) मिल्लका पूजार्थ सखीभि: सह कुत्र गच्छति स्म? काशी विश्ववृतार्थ सिन्दर्भ

- (ख) उमाया: पितामहेन कित सेटकिमतं दुग्धम् अपेक्ष्यते स्म? निर्धाते (ग) कुम्भकार: घटान् किमर्थं रचयित?
- (घ) कानि चन्दनस्य जिह्वालोलुपतां वर्धन्ते स्म?
- (ङ) नन्दिन्याः पादप्रहारैः कः रक्तरक्षितः अभवत्? चिन्दिनेः

#### 2. पूर्णवाक्येन उत्तरं लिखत-

- (क) मिल्लका चन्दनश्च मासपर्यन्तं धेनो: कथम् अकुरुताम्?
- काल: कस्य रसं पिबति? (ख)
- (ग) घटमूल्यार्थ यदा मिल्लका स्वाभूषणं दातुं प्रयतते तदा कुम्भकार: किं वदित?
- (घ) मिल्लिकया किं दृष्ट्वा धेनो: ताडनस्य वास्तविकं कारणं ज्ञातम्?
- (ङ) मासपर्यन्तं धेनो: अदोहनस्य किं कारणमासीत्?

#### 3. रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत -

- (क) मिल्लका <u>सखीभिः</u> सह धर्मयात्रायै गच्छति स्म। कि विः
- (ख) चन्दन: दुग्धदोहमें कृत्वा एव <u>स्वप्रातराशस्य</u> प्रबन्धम् अकरोत्। किन्ध्या
- (ग) मोदकानि पूजानिमित्तानि रिचतानि आसन्? कार्नि
- (घ) मल्लिका स्वपति <u>चतुरतमं</u> मन्यते? किट्टार्ग (विशेष्ठं के कारवी)
- (ङ) निन्दिनी पादाभ्यां ताडियत्वा चन्देनं रक्तरिज्ञतं करोति?

## 4. मञ्जूषायाः सहायतया भावार्थे रिक्तस्थानानि पूरयत-

## गृहव्यवस्थायै, उत्पादयेत्, समर्थकः, धर्मयात्रायाः, मङ्गलकामनाम्, कल्याणकारिणः॥

यदा चन्दन: स्वपत्न्या काशीविश्वनाथं प्रति धार्मिश्री विषये जानाति तदा सः क्रोधितः न भवति यत् तस्याः पत्नी तं हे क्थिव विश्व कथित्वा सखीभिः सह भ्रमणाय गच्छति अपि तु तस्याः यात्रायाः कृते विकास मिनिक्विन् कथयित यत् तव मार्गाः शिवाः अर्थात् कर्णाविकि भवन्तु। मार्गे काचिद्पि वाधाः तव कृते समस्यां न उत्पाद्यां। एतेन सिध्यति यत् चन्दनः नारीस्वतन्त्रतायाः समर्थिक आसीत्।

5.	घटनाक्रमानुसारं	लिखत	-	. के <del>कारीवि</del> श्वनाथमन्दिरं	प्रति	गच्छति।	2
				. 9			

- (क) सा सखीिभ: सह तीर्थयात्रायै काशीिव (ख) उभौ नन्दिन्याः सर्वविधपरिचर्या कुरुतः। 6
- (ग) उमा मासान्ते उत्सवार्थ दुग्धस्य आवश्यकताविषये चन्दनं सूचयति। 3
- (घ) मल्लिका पूजार्थ मोदकानि रचयति। ।
- (ङ) उत्सवदिने यदा दोग्धुं प्रयत्नं करोति तदा नन्दिनी पादेन प्रहरित। 7
- (च) कार्याणि समये करणीयानि इति चन्दनः नन्दिन्याः पादप्रहारेण अवगच्छिति।
- (छ) चन्दन: उत्सवसमये अधिकं दुग्धं प्राप्तुं मासपर्यन्तं दोहनं न करोति।
- (ज) चन्दनस्य पत्नी तीर्थयात्रां समाप्य गृहं प्रत्यागच्छति।

#### अधोलिखितानि वाक्यानि कः कं पति कथयति इति प्रदत्तस्थाने लिखन-

6. अधालाखतान वाक्यानि कः के प्रांत कथवात इति प्रदत्तस्थान लिखत-									
उदाहरणम्-		कः/का	कं ∕काम्						
स्वामिन्! प्रत्यागता अह	म्। आस्वादय प्रसादम्।	मल्लिका	चन्दनं प्रति						
(क) धन्यवाद मातुल	! याम्यधुना।	341	21-6-1 3/						
(ख) त्रिसेटकमितं दुग	धम्। शोभनम्। व्यवस्था भविष्य	ति। चन्दनः	उसी प						
(1) मूल्य तु दुग्य।	विक्रायव दातु शक्यत।	4-641	2 021 4						
<ul><li>(घ) पुत्रिके! नाहं पा</li><li>(ङ) देवि! मयापि जा</li></ul>	पक्षम कराम। तं सहस्माधिः सर्व <del>ास्तर्भः</del> —		मी ल्लाको						
7 पाठस्य आश्रामेण एक	तं यदस्माभिः सर्वथानुचितं कृत	मा यन्दर्	All amai						
7. पाठस्य आधारेण प्रवत्तपदानां सन्धिं/सन्धिच्छेदं वा कुरुत -									
(क) ।रावास्त =	Terar: +								
(ख) मन: हर: =									
(ग) सप्ताहान्ते =	+ +	र सन्। ह	3;						
(घ) नेच्छामि "	************	-7							
(ङ) अत्युत्तम: =	+ 52								
(अ) पाठाधारेण अध	लिखितपदानां प्रकृति-प्रत्ययं	जिम :							
(=)	गलाखतपदानां प्रकृति-प्रत्ययं	=							
(क) करणीयम् "	***************************************	व सयाज्य/विभाग	त्य वा लिखत-						
(ख) वि+क्री+ल्यप् =	***************************************	41715							
(ग) पठितम् =		10	वीर्व विष						
(घ) ताडय्+क्त्वा =	***************************************	J	7/1						
(ङ) दोग्धुम् -	Alslar at	*********							
	4 4	401							

Christia on. 10 5!

### <्रें∑े योग्यताविस्तारः <्रेंं>

'गोदोहनम्' एकांकी में एक ऐसे व्यक्ति का कथानक है जो धनवान् और सुखी बनने की इ से अपनी गाय से एक महीने तक दूध निकालना बन्द कर देता है, तािक महीने भर के दूध एक साथ निकालकर बेचकर धनवान् बन सके। इस प्रकार एक मास पश्चात् जब वह गाय को द का प्रयास करता है तब अत्यधिक दूध का तो कहना ही क्या। उसे दूध की एक बूँद भी मिलती, एक साथ दूध के स्थान पर उसे मिलते हैं गाय के पैरों से प्रहार जिससे आहत रक्तरजित होने पर वह जमीन पर गिर पड़ता है। इस घटना से वहाँ उपस्थित सभी यह समझ हैं कि यथासमय किया हुआ कार्य ही फलदायी होता है।

## <्रें≥े भाव-विस्तारः <्रें>े

#### उपायं चिन्तयेत् प्राज्ञस्तथापायं च चिन्तयेत्। पश्यतो बकमूर्खस्य नकुलेन हताः बकाः॥

बुद्धिमान व्यक्ति उपाय पर विचार करते हुए अपाय अर्थात् उपाय से होने वाली हानि के विष भी सोचे हानिरहित उपाय ही कार्य सिद्ध करता है। अपाय युक्त उपाय नहीं जैसे कि अपने क को साँप द्वारा खाए जाते हुए देखकर एक बगुले ने नेवले का प्रबन्ध साँप को खाने के लिए 1 जो कि साँप को खाने के साथ-साथ सभी बगुलों को भी बच्चों सहित खा गया। अत: ऐसा स् सदैव हानिकारक होता है, जिसके अपाय पर विचार न किया जाए।

#### "अविवेकः परमापदां पदम्"

गोदोहनम् - एकाङ्की पढ़ाते समय आधुनिक परिवेश से जोड़ें तथा छात्रों को समझाएँ कि को कार्य यदि नियत समय पर न करके कई दिनों के पश्चात् एक साथ करने के लिए संगृहीत जाता रहता है तो उससे होने वाला लाभ-हानि में परिवर्तित हो सकता है। अत: हमें सदैव अपने सभी कार्य यथासमय करने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। पाठ की नाटकीयता के साथ ही छात्रों को यह भी बताएँ कि इस नाटक से तात्कालिक समाज का पभी मिलता है कि घर की व्यवस्था स्त्री-पुरुष मिलकर ही करते थे तथा स्त्री को स्वतन्त्र लेने का भी पूर्ण अधिकार प्राप्त था।

11 अपने पांच पर अल्हारी द्वार की कार्य है आ